नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

मो. 7897475917, 9794299451
Website : www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... . दिनांक : 05.09.2021

प्रकाशनार्थ

शिक्षा मात्र सूचनाओं का ढ़ेर नहीं है। यह वो माध्यम है जो मानव के हृदय का द्वार खोलती है। शिक्षा का उद्देश्य मस्तिष्क विकास के साथ–साथ कौशल विकास एवं हृदय का विस्तार करना है। शिक्षा वो है, जो व्यक्ति को काम, क्रोध, मद, लोभ एवं मोह जैसे दुर्गुणों से दूर कर व्यक्ति को मुक्ति के मार्ग पर प्रशस्त करे। **बिना ज्ञान और शिक्षा के मनुष्य पशु के समान है। शिक्षा के आभाव में जीवन के सफलता की कामना करना व्यर्थ है।** भारत की ज्ञान परम्परा से भरे पड़े हमारे वैदिक वाग्मय भारतीय ज्ञान–शिक्षा–चिंतन एवं दर्शन सम्बन्धी उदात्त अवधारणाएं समाज में शिक्षा के महत्व को रेखांकित करने में सर्वतोभावेन समर्थ हैं।

उक्त बातें उत्तर प्रदेश शासन द्वारा **मिशन शक्ति एवं चौरी–चौरा** महोत्सव के अन्तर्गत महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर में आयोजित **''समसामयिक संदर्भ में शिक्षक का आदर्श एवं व्यवहार''** विषयक विचार गोष्ठी के अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ. भीमराव अम्बेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग के आचार्य **प्रोफेसर राजशरण शाही** ने कही। उन्होंने आगे कहा कि किसी भी राष्ट्र की वास्तविक पूँजी उस राष्ट्र का शिक्षित युवा होता है। कोई भी राष्ट्र विकास के फलक पर कितना उपर उठेगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उस देश का शिक्षक अपने आचरण व्यवहार तथा ज्ञान के क्षेत्र में कितना उच्च, नैतिक और समृद्ध है। मुख्य वक्ता ने 1986 तथा 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वर्तमान सरकार द्वारा बनायी गई शिक्षा नीति हमारी आज की शिक्षा प्रणाली को अधिक से अधिक बेहतर करेगी। 2020 की शिक्षा नीति में कुशल शिक्षक–समर्पित शिक्षक और नवोन्मेषी शिक्षक की आवश्यकता पर बल दिया गया है। आज की शिक्षा नीति विद्यार्थी केन्द्रित है और शिक्षक उसकी परिधि में है। आज की शिक्षा नीति का उद्देश्य **युगपुरूष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज** के सपनों के भारत को पुर्नजीवन देना है, जिसके अन्तर्गत पूज्य महाराज जी ने कहा था कि **शिक्षा का उद्देश्य संस्कृति और परम्परा से युक्त राष्ट्रीय चरित्र से सम्पन्न ऐसे युवाओं का निर्माण करना है जो देश को प्रगति के पथ पर उत्तरोत्तर आगे बढ़ाए।**

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य **डॉ. प्रदीप कुमार राव** ने कहा कि प्रकृति सबसे बड़ी शिक्षक है। **शिक्षा सामाजिक गरिमा प्रदान करती है।** साथ ही साथ व्यक्ति को समाज के प्रति उत्तरदायी भी बनाती है। **शिक्षा व्यक्ति के भावनात्मक विकास का साधन है।** भारतीय चिंतन परम्परा में शिक्षक को अपनी वाणी से नहीं, आचरण एवं व्यवहार से आने वाली पीढ़ी को उपदेशित करना चाहिए। शिक्षक की जवाबदेही सिर्फ किताब पढ़ाना अथवा कक्षा में जाकर व्याख्यान देने तक सीमित नहीं है। शिक्षक का कर्त्तव्य ऐसे विद्यार्थियों का सृजन करना है, जो राष्ट्र और समाज की चुनौतियों के प्रति जवाबदेह हो और निरंतर स्वयं के साथ समाज के कल्याण कार्य में रत रहें। शिक्षक जब ऐसा कर पानें में समर्थ होगा, तभी वह **वशिष्ठ, वाल्मीकि, पाणिनी–पतंजलि चाणक्य** और **गुरूगोरक्षनाथ** के सपनों के समाज और राष्ट्र का निर्माण कर सकेगा।

कार्यक्रम का संयोजन मिशन शक्ति एवं चौरी–चौरा महोत्सव की नोडल अधिकारी **श्रीमती शिप्रा सिंह** द्वारा किया गया। इस विचार गोष्ठी का संचालन महाविद्यालय के प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग के अध्यक्ष **डॉ. सुबोध कुमार मिश्र** ने किया। इस अवसर पर जूम प्लेटफार्म पर महाविद्यालय के समस्त शिक्षक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण महाविद्यालय के यू–ट्यूब चैनल एवं फेसबुक पर भी किया गया। जहाँ बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी।

Smisra

डॉ. सुबोध कुमार मिश्र
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी